ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय-कैदी और कोकिला

दिनांक—02/03/2021

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

<u>एन सी इ आर टी पर आधारित</u>

कैदी और कोकिला भावार्थ :- उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने कारागार में बंद एक स्वतंत्रता सेनानी की मनोदशा को दर्शाया है। रात के घोर अंधकार में कारागृह के ऊपर जब वह एक कोयल को गाते हुए सुनते हैं, तो उनके मन में कई तरह के भाव एवं प्रश्न उत्पन्न होने लगते हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि कोयल उनके लिए कोई संदेश लेकर आयी है, कोई प्रेरणा का स्रोत लेकर आयी है।
उससे इन प्रश्नों का बोझ सहा नहीं जाता और वह एक-एक कर के कोयल से सारे प्रश्न पूछने लगते हैं। वे सर्वप्रथम कोयल से पूछते हैं कि तुम क्या गा रही हो? फिर गाते-गाते तुम बीच-बीच में चुप क्यों हो जाती हो। वो कोयल से कहते हैं - हे कोयल! ज़रा बताओ तो, क्या तुम मेरे लिए कोई संदेश लेकर आयी हो? अगर कोई संदेश लेकर आयी हो, तो उसे कहते-कहते चुप क्यों हो जा रही हो और यह संदेश तुम्हें कहाँ से मिला है, ज़रा मुझे बताओ।
कवि ने अंग्रेज़ों के अत्यचार एवं उनके काले कारनामों को जनता के सामने प्रस्तुत किया है। पराधीन भारत में, जेल में बंद स्वतंत्रता सेनानी जेल के अंदर होने वाले अत्याचार एवं अपनी दयनीय स्थिति का वर्णन करते हुए कहता है कि उन्हें जेल
~~~~~~~~~~

के अंदर अंधकार में काली और ऊँची दीवारों के बीच डाकू, चोरों-उचक्कों के साथ रहना पड़ रहा है। जहाँ उसका कोई मान सम्मान नहीं है।
जबकि स्वतंत्रता सेनानियों के साथ इस तरह का बर्ताव नहीं किया जाना चाहिए। उन्हें जीने के लिए पेट-भर खाना भी नहीं दिया जाता और ना ही उन्हें मरने दिया जाता है। यानि कि उन्हें तड़पा-तड़पा कर जीवित रखना ही प्रशासन का उद्देश्य है। इस प्रकार उनकी स्वतंत्रता पूरी तरह से छीन ली गई है और उनके ऊपर रात-दिन कड़ा पहरा लगा होता है।
अंग्रेजी शासन उनके साथ घोर अन्याय कर रहा है और अंग्रेज़ों के राज में स्वतंत्रता सेनानी को आकाश में भी घोर अंधकार रूपी निराशा दिख रही है, जहाँ न्याय रूपी चंद्रमा का थोड़ा-सा भी प्रकाश नहीं है। इसलिए स्वतंत्रता सेनानी के माध्यम से कवि कोयल से पूछते हैं - हे कोयल! इतनी रात को तू क्यों जाग रही है और दूसरों को क्यों जगा रही है? क्या तू कोई संदेश लेकर आयी है?

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”

🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲